ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 28th Feb 2018, **Revised** on 7th Mar 2018; **Accepted** 17th Mar 2018

आलेख

प्रसाद की दार्शनिक चेतना एवं विविध प्रभाव

* डॉ0 वन्दना तिवारी, लेक्चरर (हिन्दी)
जैन पी0जी0 कॉलेज बीकानेर,राजस्थान
Email - anilshukla108@gmail.com

मुख्य शब्द – *भौतिकवाद, कर्मण्यता, कर्तव्य परायणता आदि।*

सारांश

प्रसाद अपने युग के सर्वोत्कृष्ट दार्शनिक कवि थे। उनकी रचनाओं में विश्व मानव की वैचारिक धाराओं और चिंतन दर्शन का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रसाद ने विभिन्न रूढ़ियों से ग्रस्त मनुष्यों का मार्ग प्रशस्त किया और अपने दार्शनिक चिन्तन के माध्यम से मानव को विजयिनी बनाने का आजीवन प्रयत्न किया। प्रसाद के समय में जिन वैचारिक आन्दोलनों का प्रारम्भ हुआ था, उन सबके नवीन मूल्यों, नवीन प्रतिमानों एवं नवीन मान्यताओं को भारतीय अद्वैत विचारधारा से सम्बन्धित कर आध्यात्मिक रहस्यवादिता को प्रतिष्ठापित करने का काव्यात्मक प्रयास किया।

प्रसाद ने वस्तुतः उपयोगितावादी युगानुकूल नवीन दार्शनिक चेतना को प्रवाहित किया। वे सम्पूर्ण विश्व को आनन्दमग्न देखना चाहते थे। उन्होंने देखा कि भौतिकवाद आज के युग को अंधकार के गर्त मे ले जा रहा है। अतएव वे ऐसे दार्शनिक विचारों की ओर प्रवृत्त हुए, जो व्यावहारिक जीवन में विषमता के स्थान पर समरसता ला सकें। उन्होंने गहन चिंतन और मनन करने के पश्चात् निर्णय लिया कि आधुनिक युग को एक ऐसे चिन्तन की आवश्यकता हे, जो संसार की सत्यता का प्रतिपादन करता हुआ मानव को कर्मण्यता, कर्तव्य परायणता आदि की ओर प्रवृत्त करते हुए, मानवों में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जागृत कर सके। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रसाद ने शैव सम्प्रदाय के प्रत्यभिज्ञा–दर्शन तथा उपनिषदों के माध्यम से ऐसे ही दार्शनिक चेतना को प्रदान किया। प्रसाद ने अपनी इस दार्शनिक चेतना के द्वारा आज की चिर दग्ध–दुःखी वसुधा को वह पुनीत मार्ग बताने का प्रयास किया है, जिस पर चलकर अतृप्त एवं असन्तुष्ट मानव अपार सुख एवं सन्तोष प्राप्त कर सकता है।

प्रसाद की चिन्तनधारा पर विभिन्न दर्शनों की विचारधारा का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। जिन पर हम यहाँ विचार करेंगे–

प्रसाद पर नियतिवादी विचारधारा का विकास, शैवागमों के आधार पर हुआ है। जिस प्रकार शैवागमों में 'नियति' को सम्पूर्ण संसार के कार्य व्यापार को संचालन करने वाली शक्ति बताया गया है, उसी रूप में प्रसाद ने नियति को स्वीकार किया है। नियति को अत्यन्त व्यापक एवं महान शक्ति बताया गया है। यह नीति मानव जीवन को आगे बढ़ाते हुये उसके कर्मचक्र का प्रवर्तन करती है। कामायनी के 'रहस्य सर्ग' में श्रद्धा कर्मलोक का परिचय देकर उसे नियति से संचालित मानती है –

"नियति चलाती कर्म चक्र यह तृष्णा जनित ममत्व वासना,

पाणि–पदमय पंच–भूत की यहाँ हो रही है उपासना।[1]

'अजातशत्रु' में जीवक के शब्दों में 'अदृष्ट तो मेरा सहरा है। नियति की डोरी पकड़कर में निर्भय कर्मकूप में कूद सकता हूँ क्योंकि मुझे विश्वास है कि जो होना है वह तो होगा ही फिर कायर क्यों बनूँ। कर्म से क्यों विरक्त रहूँ।'[2] इस प्रकार 'नियति' एक ऐसी शक्ति जो सम्पूर्ण संसार के जीवन क्रम का निर्माण करती है। यही प्रसाद का नियतिवाद है, जिसमें नियति विश्व में उत्पन्न दंभ, अहंकारादि अतिवादों की रोकथाम करती हुई सम्पूर्ण संसार का नियमन एवं जीवों का कल्याण करती है।

करूणा का प्रभाव प्रसाद पर वैष्णव एवं बौद्ध दोनों से पड़ा है, बौद्ध दर्शन में जीवात्मा अन्तिम लक्ष्य महाकरूणा को प्राप्त करना है। बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध वही व्यक्ति बन सकता है, जिसमें पूजा के साथ महाकरूणा का भाव भी विद्यमान हो। वैष्णवों में भी करूणा का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। 'कामायनी' में भी करूणा की यही भावना उस समय व्यक्त हुई जब मनु श्रद्धा द्वारा पालित पशु का वध करके श्रद्धा के समीप आते हैं तब श्रद्धा करूणा भाव से युक्त होकर मनु को समझाती हुई कहती है –

"मनु! क्या यही तुम्हारी होगी

उज्ज्वल नव मानवता!

जिसमें सब कुछ ले लेना हो

अन्त! बची क्या शवता।"[3]

इस प्रकार प्रसाद ने 'कामायनी' में करूणा को अत्यन्त सुन्दर रूप` प्रकट किया है।

प्रसाद पर बौद्ध दर्शन से ही क्षणिक वाद का प्रभाव पड़ा था। बौद्ध दर्शन में आत्मा के साथ ही संसार को भी परिवर्तनशील एवं क्षणिक बताया गया है। प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' नाटक में भी क्षणवादी प्रभाव दिखाई देता है। क्षणभंगुरता के सम्बन्ध में चन्द्रगुप्त नाटक में चाणक्य कहता है – 'समझदारी आने पर यौवन चला जाता है, जब तक माला गूँथी जाती हे, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं।"[4] प्रसाद ने 'कामायनी' में मानव जीवन के बिजली के प्रकाश के समान क्षणिक बताया है।

'जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील धन माला में

सौदामिनी–सन्धि–सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।'[5]

'अजातशत्रु' नाटक में संसार के समस्त साधनों को क्षणिक बताया गया है। 'अणु परमाणु, दुःखसुख चंचल क्षणिक सभी सुख साधन।'[6] प्रसाद क्षणिकवाद से प्रभावित होकर इस संसार के प्रत्येक पदार्थ, आत्मा को, जीवन को क्षणिक मानते हैं।

मानवतावादी प्रवृत्ति को वैदिक काल से ही दख ाजा सकता है। मानवतावाद से ही प्रभावित होकर प्रसाद ने झरना, आँसू, कामायनी और लहर की रचना की। 'कामायनी' तो सम्पूर्ण मानवता का ही काव्य है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

'औरों को हँसते देखो मनु

हँसो और सुख पाओ

अपने सुख को विस्तृत कर लो,

सबको सुखी बनाओ।'[7]

प्रसाद संकीर्णता से हट कर सीमा हीन मानवता की उदारता के पक्षपाती थे। मानवता से प्रभावित होकर प्रसाद ने समस्त भेद–भाव को भुलाकर सम्पूर्ण प्राणियों को एक कुटुम्ब की तरह रहने का आग्रह किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य पर मानवतावादी जीवन दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

प्रसाद पर वैदिक दर्शन का व्यापक प्रभाव था जो उनके साहित्य में 'चित्राधार' से 'कामायनी' तक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रसाद ने ब्रह्म के अस्तित्व पर सदैव विश्वास किया है उन्होंने ब्रह्मा के सगुण और निर्गुण दोनों रूप का वर्णन किया है। वे ब्रह्मा का निवास हृदय में मानते है, और ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। 'कानन कुसुम' की एक कविता में सर्वात्मवाद की पुष्टि करते हैं–

"फिर वह हमारा, हम उसी के,

वह हमीं, हम वह हुये।

तब तुम न मुझ से भिन्न हो

सब एक ही फिर हो गये।"[8]

वैदिक–दर्शन प्रसाद की मूल आत्मा है। 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' के विविध निबन्धों में उन्होंने वैदिक दर्शन के मतों की विशद् पुष्टि की है।

प्रसाद को छायावाद का ब्रह्मा एवं श्रीगणेश कर्त्ता माना जाता है। प्रसाद के काव्य में छायावाद की सभी विशेषतायें मिलती हैं। छायावाद कवियों ने नारी सम्बन्धी सौन्दर्य एवं प्रेम का सूक्ष्म चित्रण किया है। कामायनी में प्रसाद की सौन्दर्य भावना छायावादी सौन्दर्य भावना की चरम अभिव्यक्ति है।

"कुसुम कानन–अंचल में मन्द पवन प्रेरित सौरभ साकार,

रचित परमाणु पराग शरीर खड़ा हो ले मधु का आधार।"[9]

वेदना की विवृत्ति छायावादी काव्य की सर्व प्रमुख विशेषता है। प्रसाद की वेदना की गहन अनुभूति उनके 'आँसू' काव्य दिखाई देती है।

"इस करूणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती।

क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती।"[10]

व्यक्तिवाद की प्रधानता, प्रकृति–चित्रण, मानवतावाद आदि छायावादी प्रवृत्तियाँ प्रसाद के काव्य में सर्वत्र विद्यमान हैं।

रहस्यवादी भावना का प्रभाव प्रसाद की रचनाओं में प्रारम्भ से ही दिखाई देता है। उनकी रचना 'चित्राधार' में प्रकृति से सम्बन्धित कविताओं में कहीं–कहीं जिज्ञासा के भाव हैं, इसके साथ ही भक्तिपरक कविताओं में जिज्ञासा के भाव दिखाई देते हैं।

"जो सर्वव्यापक तऊ सबसे परे है।

जो सूक्ष्म है पर तऊ बसुधा धरे।"[11]

'झरना' में आकर प्रसाद का रहस्यवाद और भी उभर आया है। इसमें जिज्ञासा, प्रेम की प्राप्ति, मिलन की प्रतीक्षा, दर्शन और मिलन जैसी रहस्यवादी क्रमिक स्थितियों के भी दर्शन होते हैं। 'आँसू' के दूसरे संस्करण में रहस्यवादी

स्पर्श है, वह बहुत सुन्दर है। 'कामायनी' भी रहस्यवादी भावना से खाली नहीं है। 'कामायनी' के 'आशा सर्ग' में कवि की रहस्यवादी भावना प्रकट हुई है।

"हे विराट! हे विश्वदेव! तुम कुछ हो ऐसा भान,

मन्द गम्भीर धीर स्वर संयुक्त यही कर रहा सागर गान।"[12]

सारांशतः प्रसाद का दार्शनिक चिन्तन अन्य भारतीय दश्नों से प्रभावित होते हुए भी पर्याप्त मौलिक एवं स्वतन्त्र है, उसमें पर्याप्त गहनता एवं गम्भीरता है। प्रसाद ने भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया और उन सिद्धान्तों, विचारों को ग्रहण किया जिन्हें वे मानव के लिए कल्याणकारी समझते थे।

सन्दर्भ

1. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन–2031 रहस्य सर्ग, पृ0–243.
2. प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ0 प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, 1968, पृ0–237.
3. कामायनी, कर्म सर्ग, पृ0–126.
4. प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ0 प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर, पृष्ठ–242.
5. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, 2031, चिन्ता सर्ग, पृ0–29.
6. प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ0 प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर, पृष्ठ–243.
7. कामायनी, कर्म सर्ग, पृ0–129.
8. प्रसाद में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन, आचार्य उमेश शास्त्री देवनागर प्रकाशन, पृ0–44.
9. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, 2031, श्रद्धा सर्ग, पृ0–53.
10. आँसू, जयशंकर प्रसाद, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1991, पृ.–3
11. कवि प्रसाद, भोला नाथ तिवारी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1958, पृ0–146
12. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, 2031, आशा सर्ग, पृ0–36.

**** Corresponding Author:***

डॉ0 वन्दना तिवारी, लेक्चरर (हिन्दी)

जैन पी0जी0 कॉलेज बीकानेर,राजस्थान

Email - anilshukla108@gmail.com